॥ अर्हम् ॥

श्री दादा साहब की बड़ी पूजा

तथा

अष्ट प्रकारी पूजा

कलकत्ता निवासी स्वर्गस्थ पूज्य पिता श्री लाला
जसवंतरायजी खारड़ के स्मरणार्थ

प्रकाशित



प्रकाशक :—
हीरालाल खारड़
कलकत्ता



प्रति ५००] —: भेंट :— [संवत् २००४

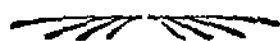
पुस्तक प्राप्ति स्थान :—
हीरालालजी खारड़
डायमण्ड हाउस
१३ विवेकानन्द रोड, कलकत्ता।



मुद्रक :—
सुराना प्रिन्टिङ्ग वर्क्स
४०२ अपर चित्तपुर रोड, कलकत्ता

॥ ॐ नमः ॥

श्री दादा साहबकी बड़ी पूजा।



पहली स्थापना स्थापन करके आह्वानका श्लोक पढ़े

(काव्यम्)

सकलगुणगरिष्ठान् सत्तपोभिर्वरिष्ठान्,
शमदमयमजुष्टांश्चारुचारित्रनिष्ठान्।
निखिलजगति पीठे दर्शितात्मप्रभावान्,
मुनिपकुशलसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्त-श्रीजिनकुशल-श्रीजिनचन्द्रसूरिगुरो अत्रावतरावतर स्वाहा। ॐ ह्रीं श्रीं जिनदत्तसूरिगुरो अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः ठः स्वाहा ॥

॥ इति प्रतिष्ठापनम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्तसूरिगुरो अत्र मम संन्निहितो भव वषट्।

॥ इति संनिधिकरणम् ॥

स्नात्रीया शुचि होके जलका कलश लेके खडा रहे।

प्रथम जल पूजा (१)

॥ दूहा ॥

ईश्वर जग चिंतामणि, कर परमेष्ठि ध्यान।
गणधर पद गुण वर्णना, पूजन करो सुजाण ॥ १ ॥
सौधर्मा मुनिपति प्रगट, वीर जिनेश्वर पाट।
मिथ्या मत तम हरणकों, भव्य दिखावण वाट ॥ २ ॥
सुस्थित सुप्रतिबुद्ध गुरु सूरि मंत्रको जाप।
काटि कीयो जब ध्यान धर, कोटिक गच्छ सुथाप ॥३॥
दशपूर्वी श्रुतकेवली, भये वज्रधर स्वाम।
ता दिन तैं गुरु गच्छको, वज्र शाख भयो नाम ॥४॥
चन्द्रसूरि भये चन्द्रसम, अतिहि बुद्धि निधान।
चंद्रकुली सब जगतमें, पसर्यो बहु विज्ञान ॥ ५ ॥
वर्द्धमान के पाट पद, सूरि जिनेश्वर भास।
चैत्यवासीको जीत कर, सुविहित पक्ष प्रकाश ॥ ६ ॥

अणहिलपुर पाटण सभा, लोक मिले तिहां लक्ष ।
खरतर विरुद सुधानिधि, दुर्लभराज समक्ष ॥ ७ ॥
अभयदेवसूरि भये, नव अंग टीकाकार ।
थंभणपारस प्रगट कर, कुष्ठ मिटावन हार ॥ ८ ॥
श्रीजिनवल्लभ सूरि गुरु, रचना शास्त्र अनेक ।
प्रतिबोधे श्रावक बहुत, ताके पट्ट विशेष ॥ ९ ॥
हुंबड श्रावक बाघडी, अट्ठारे हज्जार ।
जैन दयाधर्मी किये, वरते जय जयकार ॥ १०॥
दादा नाम विख्यात जस, सुर नर सेवक जास ।
दत्तसूरि गुरु पूजतां आनंद हर्ष उल्लास ॥ ११ ॥
दिल्लीमें पतसाहने, हुक्म उठाया शीस ।
मणिधारी जिनचंद गुरु, पूजो विसवावीस ॥ १२ ॥
ताके पट्ट परंपरा, श्री जिनकुशलसूरींद ।
अकबरकों परचा दिया, दादा श्रीजिनचंद्र ॥ १३ ॥
ऐसे दादा च्यारको, पूजो चित्त लगाय ।
जल चंदन कुसुमादि कर, ध्वज सौगंध चढ़ाय ॥ १४ ॥

(चाल-दादा चिरं जीवो, ए देशी)

गुरुराज तणी कर पूजन,

भवि सुखकर मिलसी लच्छी घणीं ॥ ए आंकणी ॥

गुरु दत्तसूरींद जग सुखकारी, गुरु सेवकने सानिध्यकारी ।

गुरु चरण कमलकी बलिहारी ॥ गु० ॥ १ ॥

संवत इग्यारे वार शशि, बत्तीसे जनम्या शुभ दिवसी ।

श्रावक कुल हुँबडने हुलसी ॥ गु० ॥ २ ॥

जसु वाछगसा पितु नाम भणे, वाहडदे माता हर्ष घणे ।

इकतालीसे दीक्षा पभणे ॥ गु० ॥ ३ ॥

गुणहत्तरे वल्लभ पाट धरी, गुरु मायाबीजनो जाप करी ।

गुरु जगमें प्रगट्या तरण तरी ॥ गु० ॥४॥

मणिधारी जिनचंद उपगारी, जिनदत्त सूरींदके पटधारी ।

भये दादा दूजा सुखकारी ॥ गु० ॥ ५ ॥

रासल पितु देल्हणदे माता, श्रीमाल गोत्र बोधन शाता ।

दिल्ली पतसाह सुगुण गाता ॥ ६ ॥

जसु चौथे पाट उद्योत करी, जिनकुशल सूरींद अति हर्ष भरी

तेरा सेंतीसे जन्म धरी ॥ गु० ॥ ७ ॥

जसु जिल्हा जनक जगत्र जीयो, वर जैतश्री शुभ स्वपन लीयो
गुरु छाजेड गोत्र उद्धार कीयो ॥ गु० ॥ ८ ॥
धन सेंतालीसें दीक्ष धरी, जिनचंद सूरीश्वर पाट वरी ।
गुणहत्तरे सूरि मंत्र जाप करी ॥गु०॥९॥
सेवामें बावन वीर खरा, जोगणीयां चौसठ हुक्म धरा ।
गुरु जगमें केइ उपकार करा ॥ गु० ॥ १० ॥
माणकसूरीश्वर पद छाजे, जिनचंद सूरि जगमें गाजे ।
भये दादा चौथा सुख काजे ॥ गु० ॥ ११ ॥
जिन चांद उगायो उजियालो, अम्मावसको पूनमवालो ।
सब श्रावक मिल पूजन चालो ॥ गु० ॥ १२ ॥
जिन अकब्बरको परचादीना, काजीकी टोपी वशकीना ।
बकरीका भेद कह्या तीना ॥ गु० ॥ १३ ॥
गंधोदक सुरभि कलश भरी, प्रक्षालन सद्गुरु चरन परी ।
या पूजन कवि ऋद्धिसार करी ॥ गु० ॥ १४ ॥

(श्लोक)

सुरनदीजलनिर्मलधारकैः,
प्रबलदुष्कृतदाघनिवारकैः ।

सकलमङ्गलवांछितदायकौ,
कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्त-सूरीश्वराय, मणिमण्डितभालस्थलाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय, श्रीजिनकुशलसूरीश्वराय, अकब्बरअसुरत्राणप्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्र-सूरीश्वराय जलं निर्वपामि ते स्वाहा ॥१॥

द्वितीय केसर चंदन पूजा (२)

(दूहा)

केसर चंदन मृगमदा, कर घनसार मिलाप ।
परचा जिनदत्त सूरिका, पूज्यां तूटे पाप ॥ १ ॥

(चाल-वीण वाजे की)

दीनके दयाल राज, सार सार तूं ॥ आंकणी ॥
आये भरुअच्छ नग्र, धाम धूम धूं ।

बाजते निशान ठोर, हर्ष रंग हूं ॥ ह० ॥ दी० ॥ १ ॥
मुसलमान मुगलपूत, फोज मोज मूं ।
फोत मोत हो गया, हायकार सूं ॥ हा० ॥ दी ॥ २ ॥
सघ्न विघ्न देख आप, हुक्म दीन यूं ।
लावो मेरे पास आश, जीव दान दूं ॥ जी०॥दी॥ ॥३ ॥
मृतक पूत मंत्रसे, उठाया दीन तूं ।
देखके अचंभ रंग, दास खास कूं ॥ दा०॥ दी० ॥४॥
करत सेव भाव पूर, तूर्कराज जूं ।
छोडके अभक्ष्य खान, हाजरी भरु ॥हा० ॥ दी० ॥५॥
बीज खीजके पडी, प्रतिक्रमणके मूं ।
हाथसे उठाय पात्र, ढांक दीन छूं ॥ ढां० ॥ दी० ॥६॥
दामिनी अमोल बोल, सिद्ध राज तूं ।
देउ वरदान छोड, बंध कीन क्यूं ॥ बं० ॥ दी ॥ ७ ॥
दत्त नाम जपत जाप, करत नांह चूं ।
फेर मैं पडूंगी नांह, छोड दीन फूं ॥ छो० ॥दी० ॥८॥
करोगे निहाल आप, पाव पलक नूं ।
रामऋद्धिसार दास, चरण छांह लूं ॥ च० ॥ दी० ॥९॥

(श्लोक)

मलयचन्दन-केसरचारिणा,
निखिलजाड्यरुजातपहारिणा ।
सकलमङ्गलवांछितदायकौ,
कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परम०
केसर-चन्दनं निर्वपामि ते स्वाहा ॥२॥

अथ तृतीय पुष्प पूजा (३)

(दूहा)

चंपा चमेली मालती, मरुवा अरु मुचकुंद ।
जो चाढे गुरु चरण पर, नित घर होय आनंद ॥१॥
(राग मोड-निंद तो गइ वादीला मारी, ए चाल)
गुरु परतिख सुरतरु रूप, सुगुरु सम दूजो तो नहीं ।
दूजो तो नहीं रे सुमति जन, दूजो तो नहीं ॥
गुरु परतिख सुरतरू रूप, सुगुरुने पूजो तो सही॥ए आंकणी॥
चितोड नगरी वज्रथंभमें, विद्या पोथी रही रे ॥ सु० ॥ वि०॥

हेजी मंत्र जंत्र विद्यासे पूरी, गुरु निज हाथ ग्रही ॥
सु० गु० ॥ गुरु पर० ॥ १ ॥
पुर उज्जेणी महाकालके, मंदिर थंभ कही रे ॥ सुभ० ॥
हेजी सिद्धसेन दिनकरकी पोथी,
विद्या सर्व लही रे ॥ सु० वि० ॥ गुरु पर० ॥२॥
उज्जेणी व्याख्यान बीचमें,
श्राविका रूप ग्रही रे ॥ सु० श्रा० ॥
हेजी जोगणीयां छलनेकों आई,
सबको खील दइ ॥ सु०स० ॥ गु० ॥ ३ ॥
दीन हाथ जोगणीयां चौसठ,
गुरुकी दासी भयी रे ॥ सु० गु० ॥
हेजी सात दीये वरदान हरषसें,
पसर्या सुजश मही सु० प० ॥ गु० ॥ ४ ॥
पुष्पमाल गुरु गुणकी गुंथी,
चाढो चित्त चही रे ॥ सु० चा० ॥
हेजी कहे रामऋद्धिसार सुजसकी,
चूंटी आप दई सु० चू० ॥ गु० ॥ ५ ॥

(श्लोक)

कमल-चंपक-केतकिपुष्पकैः,
परिमलाहृतषट्पदवृन्दकैः ।
सकलमङ्गलवांछितदायकौ,
कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय, परम० पुष्पं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थ धूप पूजा (४)

(दूहा)

धूप पूज कर सुगुरुकी, पसरे परिमल पूर ।
जस सुगंध जगमें वधे, चढे सवाया नूर ॥ १ ॥

(राग सोरठ-कुबजाने जादु डारा, ए चाल)

अंबिका बिरुद वखाणे, गुरु तेरो अंबिका० ।
तुम युग प्रधान नहीं छाने, गु० ॥ ए आंकणी ॥
गढ गिरनारपें अंबड श्रावक, ऐसो नियम चित्त ठाने ।
युगप्रधान इस जुगमें कोई,देखुंजन्म प्रमाणे॥गु०अं०॥१॥

कर उपवास तीन दिन बीते, प्रगटी अंबा ज्ञाने ।
प्रगट होय करमें लिख दीना, सुवरण अक्षर दाने ॥
गु० अं० ॥ २ ॥
या गुण संयुत अक्षर वांचे, ताकों युगवर जाने ।
अंबड मुलक मुलकमें फिरता, सूरि सकल पतवाने ॥
गु० अं० ॥ ३ ॥
आया पास तुम्हारे सद्गुरु, कर पसार दिखलाने ।
वासक्षेप उन ऊपर डाला, चेला बांच सुनाने ॥
गु० अं० ॥ ४ ॥
सर्व देव है दास जिनोंके, मरुधर कल्प प्रमाणे ।
युगप्रधान जिनदत्तसूरीश्वर, अंबड शीप झुकाने ॥
गु० अं० ॥ ५ ॥
उद्योतन सूरिने निज हाथे, चौरासी गच्छ ठाने ।
सो सब तुमरी सेवा सारे, चौरासी गच्छ माने ॥
गु० अं० ॥ ६ ॥
जो मिथ्यात्वी तुमको न पूजे, सो नहीं तत्त्व पिछाने ।
भद्रबाहु स्वामी तुम कीर्त्तन, कीनी ग्रंथ प्रमाणे ॥
गु० अं० ॥ ७ ॥

युगप्रधान परिकीरण गंडिका, गणधर पद वृत्ति माने ।
कहे रामऋद्धिसारगुरुकी, पूजा धूप कराने ॥गु०अं०॥८॥

(श्लोक)

अगर–चन्दन–धूपदशांगजैः,
प्रसरिताऽखिलदिक्षु सुधूम्रकैः ॥
सकलमङ्गलवाञ्छितदायकौ,
कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परम० धूपं
निर्वपामि ते स्वाहा ॥ ४ ॥

अथ पंचम दीप पूजा (५)

॥ दूहा ॥

दीप पूज कर सुगुण नर, नित नित मंगल होत ।
उजयाला जगमें जुगत, रहे अखंडित ज्योत ॥ १ ॥

(चाल-ख्यालकी)

पूजन कीज्योजी नर नारी, गुरुमहाराजका हो । पू० ॥
॥ आंकणी ॥

सिंधु देशमें पंच नदी पर, साधे पांचों पीर ।
लोई[1] ऊपर पुरुष तिराये, ऐसे गुरु सधीर ॥ पू० ॥१॥
प्रगट होयके पांच पीरने, सात दीये वरदान ।
सिंधु देशमें खरतर श्रावक, होवेगा धनवान ॥ पू०॥२॥
सिंधु देश मुलतान नगरमें, बड़ा महोत्सव देख ।
अंबड और गच्छका श्रावक, गुरुसें कीना द्वेष ॥पू०॥३॥
अणहिलपुर पत्तनमें आवो, तो मैं जाणु सच्चा ।
बड़े महोत्सव आवेंगे तू, निर्धन होगा कच्चा ॥पू० ॥४॥
पत्तन बीच पधारे दादा, सन्मुख निर्धन आया ।
गुरु बतलाया क्योंरे अंबड, अहंकार फल पाया ॥पू० ॥५॥
मनमें कपट कीया अंबडने, खरतर महिमा धारी ।
जहर दीया उन अशन-पानमें, गुरु विध[2] जाणी सारी ॥ पू० ॥ ६ ॥
भणसाली मुख वर श्रावकसे, निर्विष मुद्रा मंगाई ॥
जहर उतारा तब लोकोंमें, अंबड निंदा पाई ॥पू० ॥७॥
मरके व्यंतर हुवा वो अंबड, रजोहरण हर लीना ।
भणशाली व्यंतर वचनोंसें, गोत्र उतारा कीना ॥पू०॥८॥

१ कंबल, २ विधि कार्य ।

सज्ज होय गुरु आंधा लेके, गोत्र बचाया सारा।
ऋद्धिसार महिमा सद्गुरुकी दीपकका उजियारा ॥पू०॥६॥

श्लोक

अतिसुदीप्तिमयैः खलु दीपकै-
विमलकाञ्चनभाजनसंस्थितैः।
सकलमङ्गलवाञ्छितदायकौ,
कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परम० दीपं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ ५ ॥

अथ षष्ठ अक्षत पूजा (६)

(दूहा)

अक्षत पूजा गुरु तणी करो महाशय रंग।
क्षति न होवे अंगमें, जीते रणमें जंग ॥ १ ॥

(राग-आशावरी)
(अवधू सो जोगी गुरु मेरा-ए चाल)

रतन अमोलख पायो, सुगुरु सम रतन अमोलख पायो।
गुरु संकट सबही मिटायो, सु० ॥ ए आंकणी ॥

विक्रमपुर नगरी लोकनकों, हैजा रोग सतायो ।
बहोत उपाय कीया शांतिकका, ज़रा फ़रक नहीं आयो
॥ सुगुरु सम रतन० ॥१॥
जोगी जङ्गम ब्रह्म संन्यासी, देवी देव मनायो ।
फरक नहीं किनहीने कीना, हाहाकार मचायो ॥सु०॥२॥
रतन चिंतामणि सरिखो साहिब, विक्रमपुरमेंआयो ।
जैन संघका कष्ट दूर कर जय, जयकार वरतायो ॥सु०॥३॥
महिमा सुण माहेश्वर ब्राह्मण, सबही शीष नमायो ।
जीवित दान करो महाराजा, गुरु तब यों फरमायो ॥सु०॥४॥
जो तुम समकित व्रतको धारो अब ही कर दूं उपायो ।
तहत वचन कर रोग मिटाया, आनंद हर्ष बधायो ॥सु० ॥५॥
जो कोई श्रावक व्रत नहीं धार्यो, पुत्री पुत्र चढायो ।
साधु पांचसे दीक्षित कीना, साधवियां समुदायो ॥सु० ॥६॥
मंत्रकला गुरु अतिशय धारी, ऐसो धर्म दीपायो ।
ऋद्धिसार पर किरपा कनी, साचो इलम बतायो ॥सु०॥७॥

(श्लोक)

सरलतन्दुलकैरतिनिर्मलैः,
प्रवरमौक्तिकपुञ्जवदुज्ज्वलैः ।

सकलमङ्गलवाञ्छितदायकौ,
कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परम० अक्षतं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ ६ ॥

अथ सप्तम नैवेद्य पूजा (७)

(दूहा)

नैवेद्य पूजा सातमी, करो भविक चित चाव ।
गुरु गुण अगणित कुणगिणे, गुरु भव तारण नाव ॥१॥

(राग—कल्याण)

(तेरी पूजा बणी है रसमें, ए चाल)

गुरु किया असुरको वशमें, हो गुरु० ॥ ए आंकणी ॥
बडनगरीमें आप पधारे, सांमेला धसमसमें ।
ब्राह्मण लोक बडे अभिमानी, मिलकर आया सुसमें
हो गुरु० ॥ १ ॥
महिमा देख सक्या नहीं गुरुकी, भरे मिथ्यात्वी गुसमें ।
मृतक गउ जिनमन्दिर आगे, रख दी सनमुख चसमें ॥
हो गुरु० ॥२॥

श्रावक देख भये आकुलता, कहे गुरूसे कसमें ।
चिंता दूर करो है संघकी, गउ उठ चाली इसमें ॥
हो गुरू० ॥३॥
मरी गउकों जीती कीनी, लोक रह्या सब हसमें ।
जाके गाय पडी रुद्रालय, संघ भया सब खुसमें ॥
हो गुरु० ॥४॥
ब्राह्मण पांव पड्या सब गुरुके, देख तमासा इसमें ।
हुकम उठावेंगे सिर ऊपर, तुम संततिकी दिशमें ॥
हो गुरु० ॥५॥
नमस्कार है चमत्कारकों, कीनी पूजा रसमें ।
कहे राम ऋद्धिसार गुरुकी, आनंद मंगल जसमें ॥
हो गुरु० ॥६॥

(श्लोक)

बहुविधैश्चरुभिर्वटकैर्यकैः,
प्रचुरसर्पिषि वक्च सुखज्जकैः ।
सकलमङ्गलवांछितदायकौ,
कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परम० नैवेद्यं निर्वपामि ते स्वाहा ॥ ७ ॥

अथ अष्टम फल पूजा (८)

(दूहा)

फल पूजासे फल मिले, प्रगटे नवे निधान ।
चिहुं दिशि कीर्ति विस्तरे, पूजन करो सुजान ॥१॥

(रथ चढ यदुनन्दन आवत है—ए चाल)

चालो संघ सब पूजनकों,
गुरु समर्या सन मुख आवत हे रे; चा० ॥ ए आंकणी ॥
आनंदपुर पट्टनको राजा, गुरु शोभा सुण पावत हे रे, चा० ।
भेज्या निज परधान बुलाने, नृप अरदास सुणावत हे रे ॥
चालो० ॥ १ ॥
लाभ जान गुरु नगर पधारे, भूपति आय बधावत हे रे, चा० ।
राजकुमरको कुष्ठ मिटायो, अचरज तुरत दिखावत हे रे ॥
चालो ० ॥ २ ॥
दश हजार कुटुंब संघ नृपको, श्रावक धर्म धरावत हे रे ॥
प्रतापगढको पमार राजा, पुरमें गुरु पधरावत हे रे, ॥
चालो० ॥ ३ ॥
दयामूल आज्ञा जिनवरकी, बारह व्रत उचरावत हे रे, चा० ।
ऐसे चार राज समकित धर, खरतर संघ बनावत हे रे ॥
चालो० ॥ ४ ॥

कुष्ठ जलंदर क्षयी भगंदर, कइयक लोक जीवावत हे रे, ॥
चालो० ॥ ५ ॥
तीस हजार एक लख श्रावक, महिमा अधिक रखावत हे रे, चा०
कहत राम ऋद्धिसार गुरुकी, फल पूजा फल पवत हे रे ॥
चालो० ॥ ५ ॥

(श्लोक)

पनस–मोच–सदा फल–कर्कटैः,
सुसुखदैः किल श्रीफल–चिर्भटैः ।
सकलमङ्गलवांछितदायकौ,
कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय, परम० फलं निर्वपामि ते स्वाहा ॥८॥

अथ नवम वस्त्र पूजा (६)

॥ दूहा ॥

वस्त्र अतर पूजना, चोवा चंदन चंपेल ।
दुश्मन सब सज्जन हुवे, करे सुरंगा खेल ॥ १ ॥

(मनडो किमही न बाजे हो कुंथुजिन—ए चाल)

लखमी लीला पावे रे सुन्दर, लखमी लीला पावे ।
जे गुरु वस्त्र चढावे रे सुं०, सुजस अतर महकावे रे सु०
दुर्जन शीस नमावे रे सु०, ए ॥ आंकणी ॥
दरिया बीच जहाज श्रावककी, डूबण खतरे आवे ।
साचे मन समरे सद्गुरुको, दुःखकी टेर सुणावे रे ॥
सु ॥ १ ॥
वाचंता व्याख्यान सूरीश्वर, पंखी रूपे थावे ।
जाय[१] समंदमें जहाज तिराई, फिर पीछा जब आवे रे ॥
सु० ॥ २
पूछे संघ अचरजमें भरीयो, गुरु, सब बात सुणावे ।
ऐसे दादा दत्त-कुशल गुरु, परचा प्रकट दिखावे रे ॥
सु० ॥ ३ ॥
बोथर गूजरमल श्रावककी, दादा कुशल तिरावे ।
सुखसूरि गुरु समयसुंदरकी, जहाज अलोप दिखावे रे ॥
सु० ॥४ ॥
बारेसे इग्यारे दत्तसूरि, अजमेर अनसण ठावे ।

१ समुद्रमें ।

उपज्या सौधर्म देवलोके, सोमंधर फरमावे रे ॥
सु० ॥ ५ ॥
इक अवतारी, कारज सारी, मुक्ति नगरमें जावे ।
कुशलसूरि देराउर नगरे, भुवनपति सुर थावे रे ॥
सु० ॥ ६ ॥
फागण वदि अम्मावस सीधा, पूनम दरश दिखावे ।
मणिधारी दिल्लीमें पूज्यां, संकट सुपने नावे रे ॥
सु० ॥ ७ ॥
रथी[1] उठी नहीं देख बादसाह, वांही चरण पधरावे ।
वस्त्र अतर पूजा सदगुरुकी, ऋद्धिसार मन भावे रे ॥
सु० ॥७॥

अखिलहीरशुभैर्नवचीरकैः
प्रवरप्रावरणैः खलु गन्धतैः ।
सकलमङ्गलवांछितदायकौ,
कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परम० वस्त्रं चोवा-चन्दन-पुष्पसारं निर्वपामिते स्वाहा ॥६॥

[1] मांढवी-मंढो ।

अथ दशम ध्वज पूजा (१०)

(दूहा)

ध्वज पूजा गुरुराजकी, लहके पवन प्रचार ।
तीन लोकके शिखर पर, पहुँचे सो नर नार ॥ १ ॥

(जिन गुण गावत सुर सुंदरी रे-ए चाल)

ध्वज पूजन कर हरख भरी रे, ध्व० ॥ आंकणी ॥
सज सोले शिणगार साहेल्यां, श्री सद्गुरुके द्वार खरी रे ।
अपच्छर रूप सुतन सुत लिनी, ठम ठम पग झणकार करी रे ॥
ध्व० ॥ १ ॥
गावत मंगल देत प्रदक्षिणा, धन धन आनंद आज धरी रे ।
निर्धनको लखमी बखसावत, पुत्र विना जाके पुत्र करी रे ॥
ध्व० ॥ २ ॥
जो जो परतिख परचा देख्या, सुणो भविक दिल बीच धरीरे ।
फतेमल्ल भडगयीया श्रावक, पहली शंका जोर करी रे ॥
ध्वज० ॥ ३ ॥
परतिख देखुं तब मैं जानुं, प्रगट्या ततखिण तरण तरी रे ।
पुष्पमाला सिर केसर टीका, अधर श्वेत पोशाक करी रे ।
ध्व० ॥ ४ ॥

माँग माँग वर बोले वाणी, फरक बतावो गुरु मेघ झरी रे।
फरक उगायो दोय लाख पर, तेरी महिमा नित हरी रे॥
ध्व० ॥ ५ ॥

गैनचंद गोलेच्छाको तें, परतिख दीना दरस फरी रे।
विक्रमपुरमें थंभ तुमारा, चित्र करावत सुरसुंदरी रे॥
ध्व० ॥ ६ ॥

थानमल्ल लुणिया पर किरपा, लखमी लीला सहज वरी रे।
लखमीपति दूगडकी साहिब, हुंडीकी भुगतान करी रे॥
ध्व० ॥ ७ ॥

जो उपगार कर्या तें मेरा, दीनी सनमुख अमृत झरी रे।
तेरी कृपासे सिद्धि पाई, जागे जस अरु भाग भरी रे॥
ध्व० ॥ ८ ॥

भूखा भोजन तिसिया पानी, भरत हाजरी देव परी रे।
विषम वखत पर सहाय हमारी, ऋद्धिसारकी गरज सरी रे॥
ध्व० ॥ ९ ॥

श्लोक

मृदुमधुरध्वनिकिङ्किणीनादकै–
र्ध्वजविचित्रितविस्तृतवासकैः।

सकलमङ्गलवाञ्छितदायकौ,
कुशलसूरिगुरोश्चरणौ यजे ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परम० शिखरो-
परिध्वजां आरोपयामि स्वाहा ॥१०॥

अथ अर्घ्य पूजा-कलश (११)

(दूहा)

भट्टारक पदवी मिले, जीते वादी वृन्द ।
कंठ विराजत सरस्वती, जगमें श्री जिनचंद ॥

(राग-आशावरी अथवा धन्याश्री)

पूजा जग सुखकारी सुगुरु तेरी पूजा० ।
तेरे चरण कमल बलिहारी ॥ सु० ॥ आंकणी ॥
साह सलीम दिल्लीको बादसाह, सुणके शोभ तिहारी ।
भट्ट हरायो चरचा करके, भट्टारक पद धारी ॥सु० ॥१॥
अम्मावसकी पूनम कीनी, चंद उगायो भारी ।
चढके गगन करी है चरचा, सूरजसे तप धारी ॥सु०॥२॥
चौदासौ उगणीस सालमें, लखनउ नगर मझारी ।
गोरा फिरंगी टोपीवाला, दिलमें यह बात विचारी ॥
सु० ॥३॥

जैनश्वेतांबर देव जो सच्चा, पूरे मनसा हमारी ।
वाणी निकसी राज्य-तुमारा, होवेगा अधिकारी ॥
सु० ॥४॥

अंधेकी खोली आंख सुरतमें, पूजे सब नर नारी ।
कहां लग गुण वरणुँ मैं तेरा, तूं ईश्वर जयकारी ॥सु०॥५॥
उगणीसे संवत्सर तेपन, मिगसर मास मझारी ।
शुक्ल दूज जिनचंदसूरीश्वर, खरतरगच्छ आचारी ॥
सु० ॥६॥

कुशलसूरिके निज संतानो, क्षेमकीर्ति मनोहारी ।
प्रतिबोध्या जिन क्षत्री पाँचसे, जान[१] सहित अनगारी ॥
सु० ॥७॥

क्षेमधाड़ शाखा जब प्रगटो, जगमें आनंदकारी ।
धर्मशील साधु गुण पूरे, कुशलनिधान उदारी ॥सु०॥८॥
या पूजन करतां सुख आनंद, धन धन लखमी सारी ।
कहत राम ऋद्धिसार गुरुकी, जय जय शब्द उचारी ॥
सु० ॥९॥

* दादा साहबकी बड़ी पूजा समाप्त *

---

१ जान-बरात ।

आरती

जय जय गुरु देवा २, आरती मंगला मेवा, आनंद सुख लेवा ॥
जय जय० ॥आंकणी॥

इक व्रत दुय व्रत, तीन चार व्रत, पंचम व्रत सोहे ।
जगत जीव निसतारण, सुर नर मन मोहे ॥ ज० ॥१॥
दुःख दोहग सब हर कर सद्गुरु, राजन प्रतिबोधे ।
सुत लखमी वर दे कर, श्रावक कुल सोधे ॥ ज०॥ २॥
विद्या पुस्तक धर कर सद्गुरु, मुगल पूत तारे ।
वश कर जोगण चौसठ, पांच पीर सारे ॥ ज० ॥३॥
बीज पडंती वारी सद्गुरु, समंद[1] जहाज तारी ।
वीर कीये वश बावन, प्रगटे अवतारी ॥ ज० ॥४॥
जिनदत्त जिनचंद कुशलसूरि गुरु, खरतर गच्छ राजा ।
चौरासी गच्छ पूजे, मन वांछित ताजा ॥ ज० ॥५॥
मन शुद्ध आरती कष्ट निवारण, सद्गुरुकी कीजे ।
जो माँगे सो पावे जगमें जस लीजे ॥ ज ॥ ६ ॥
विक्रम पुर[2] में भगत तुमारो, मंत्र कलाधारी ।
नित उठ ध्यान लगावत, मन वंछित फल पावत,
रामऋद्धिसारी ॥ जय० ॥ ७ ॥

॥ इति आरती ॥

१ समुद्रमें । २ बीकानेर

श्री दादाजी महाराज की

अष्टप्रकारी पूजा

॥ अथ प्रतिष्ठा ॥

सकलगुणगरीष्ठान् सत्तपोभिर्वरिष्ठान् ।
शमदमयमतुष्टाँश्चारुचारित्रनिष्ठान् ॥
निखिलजगति पीठे दर्शितात्मप्रभावान् ।
मुनीपकुशलसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरे अत्र तिष्ठ ठः ठः स्वाहा ॥

॥ इति प्रतिष्ठापन ॥

॥ अथ संनिधिकरणम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरो अत्र मम सन्निहितो भव वषट् ॥

॥ इति सन्निधिकरणम् ॥

॥ अथ लघु अष्टप्रकारी पूजी ॥

(१) अथ जल पूजा

सुरनदीजलनिर्मलधारया ।
प्रबलदुष्कृतदाघनिवारया ॥
सकलमङ्गलवांञ्छितदायकं,
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरण-
कमलेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा ॥

(२) अथ चन्दन पूजा

मलयचंदनकेशरवारिणा ।
निखिलजाड्यरुजातपहारिणा ॥
सकलमङ्गलवाञ्छितदायकं,
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरण-
कमलेभ्योश्चंदनं यजामहे स्वाहा ॥

(३) अथ पुष्प पूजा

कमलकेतकिचंपकपुष्पकैः ।
परिमलाहतषट्पदवृंदकैः ॥
सकलमङ्गवांछितदायकं ।
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकमलेभ्यो पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥

(४) अथ अक्षत पूजा

सरलतन्दुलकैरतिनिर्मलैः ।
प्रवरमौक्तिकपुञ्जवहूज्वलैः ॥
सकलमङ्गलवांछितदायकं ।
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकमलेभ्यो अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥

(५) अथ नैवेद्य पूजा

वहुविधैश्चरुभिर्वटकेयकैः ।
प्रवरमोदमपुञ्जसुखार्जकैः ॥
सकलमङ्गलवांछितदायकं ।
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्च-
रणकमलेभ्यो नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥

(६) अथ दीप पूजा

अतिसुदीप्तमयैः खलुदीपकै-
र्विमलकांचनभाजनसंस्थितैः ॥
सकलमङ्गलवांछितदायकं ।
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्च-
रणकमलेभ्यो दीपं यजामहे स्वाहा ॥

(७) अथ धूप पूजा

अगरचंदनधूपदशाङ्गजै ।
प्रसरिताखिलदिक्षुसुधूम्रकैः ॥
सकलमंगलवांछितदायकं ।
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकमलेभ्य धूपं यजामहे स्वाहा ॥

(८) अथ फल पूजा

परसमोचनसदाफलकर्कटैः ।
सुसुखदैः किल श्रीफलचिर्भटैः ।
सकलमंगलवांछितदायकं ।
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चरणकमलेभ्योः फलं यजामहे स्वाहा ॥

(८) अथ अर्घ्य पूजा

जलसुगंधप्रसूनसुतंदुलै-
श्चरुप्रदीपकधूपफलादिभिः ।
सकलमंगलवांछितदायकं
कुशलसूरिगुरोश्चरणं यजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरोश्चर-
णकमलेभ्यो अर्घ्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥

॥ श्री दादाजी की अष्टप्रकारी पूजा सम्पूर्ण ॥

